Western Philosophy

Kants Critical Philosophy

इमानुएल कान्ट एक जर्मन दार्शनिक है। उन्होंने बुद्धिवाद और अनुभववाद दोनों सिद्धांतों की समीक्षा करके उनके गुणों और दोषों को प्रस्तुत किया। इनके गुणों को लेकर ज्ञान की एक समुचित परीक्षा दी गई, इसलिए कान्ट के ज्ञान-सिद्धान्त को समीक्षावाद कहते है।

कान्ट के अनुसार बुद्धिवाद की सबसे बड़ी कमजोरी है कि वह कोई नया ज्ञान नहीं देता है। मानव-मन में निहित प्रत्ययों का विश्लेषण करके ज्ञान प्राप्त किया जाता है इसलिए ज्ञान नया नहीं होता, बल्कि पहले से जाना हुआ होता है, अतः बुद्धिवाद ज्ञान को प्रागनुभविक मानता है। कान्ट ने भी स्वीकार है कि ज्ञान प्रागनुभविक होता है लेकिन विश्लेषणात्मक नहीं होता है।

परन्तु ज्ञान का आरम्भ अनुभव से होता है कान्ट के अनुसार, अनुभववाद की खूबी है कि वह नया ज्ञान देता है, पहले से कुछ भी जाना हुआ नहीं होता, बल्कि इन्द्रियसंवेदनाओं के ग्रहण के पश्चात ही ज्ञान होता है। परन्तु अनुभववाद की कमजोरी है कि वह निश्चित, असंदिग्ध और सार्वभौम ज्ञान नहीं दे सकता है, ज्ञान संभाव्य नहीं होता है बल्कि निश्चित और असंदिग्ध होता है। जैसा ज्ञान बुद्धिवाद देता है यह बुद्धिवाद की खूबी है, इस प्रकार कान्ट ने बुद्धिवाद और अनुभववाद दोनों की कमजोरियों को अस्वीकार करते हुए दोनों की विशेषताओं को स्वीकार किया, और ज्ञान को नवीन, सार्वभौम असंदिग्ध और निश्चित माना है।

कान्ट के अनुसार ज्ञान का आरम्भ दिक् और काल में ~~इन्द्रियानुभव~~ इन्द्रियानुभव से होता है, लेकिन कालान्तर में वह बुद्धिनिष्ठ होकर सार्वभौम और निश्चित हो जाता है, उदाहरण के लिए एक बच्चा अपने आस-पास की चीजों को अपनी इन्द्रियों के द्वारा जानता है, लेकिन बाद में उन वस्तुओं को इन्द्रियों के बीना भी जान लेता है, जैसे- गिलास, बच्चा पहले गीलास को देखता है, और जानता है कि अमुक प्रकार की चीज गिलास है

बाद में जब कोई कहता है कि गिलास लाओ, तो वह गिलास ले आता है, उसके मन में गिलास का प्रत्यय रहता है और उस प्रत्यय के अनुरूप वस्तु (गिलास) को ले आता है, अतः ज्ञान अनुभव और बुद्धि दोनों का सामंजस्य है। यहाँ तक की गणित का ज्ञान भी प्रागनुभविक और विश्लेषणात्मक नही है, उसका आरम्भ भी अनुभव से होता है। जैसे- 7+5 = 12, बचपन में हमारे सामने सात और पाँच वस्तुएँ रख दी जाती है और एक-एक करके गिनाया जाता है, गिनने के बाद पता चलता है की ये बारह है, परन्तु बड़े होने पर 7 और 5 को जोड़ने के लिए वस्तुओं की सहायता नही लेनी पड़ती है बल्कि तुरंत हम 12 कहते हैं, अतः ज्ञान मे आत्मनिष्ठता और वस्तुनिष्ठता दोनो तत्व समाहित होते है यही कारण है कि कान्ट ने ज्ञान को ज्ञाता-ज्ञेय का समन्वय माना है, चुकि ज्ञान का आरंभ अनुभव से होता है इसलिए संश्लेषणात्मक और बुद्धिजन्य होने से प्रागनुभविक है,